महर्षि बाल्मीकि की जीवन कथा | By Mukesh Kumar |

आओ भक्तों प्रभु श्रीराम के जन्म से पूर्व
रामायण रचयिता महर्षि वाल्मीकि जी की पावन कथा सुनते हैं
आओ हम सभी मिलकर इस पावन कथा का गुणगान करें।

जय श्री वाल्मीकि जी की
जय श्री रामायण रचयिता की।

रामायण रचयिता को प्रणाम
महर्षि को प्रणाम
वाल्मीकि जी की बोलो जय जयकार
महाप्रभु की बोलो जय जयकार।

महर्षि श्री वाल्मीकि जी की
पावन कथा सुनाए
रामचरित की रचना किए
उनको शीश नवाएं रे भक्तों
उनको शीश नवाएं
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब।

सुनो कथा वाल्मीकि जी की
श्रद्धा से ध्यान लगाए
एक समय की बात सुनो तुम
प्रेम से तुम्हें सुनाए रे भक्तों
प्रेम से तुम्हें सुनाए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब।

ब्रह्मा जी से कहे वशिष्ठ जी
वो गण कौन बताए
देवों का जिन्हें श्राप मिला था
किस्सा उनका सुनाए
ऋषि वशिष्ठ के कहने पर ही
ब्रह्मा जी कथा सुनाए रे भक्तों
ब्रह्मा जी कथा सुनाए
वाल्मीकि जी की बोलो जय जयकार
महाप्रभु की बोलो जय जयकार।

एक समय लक्ष्मी जी से
विष्णु जी ये बताए
उसी समय दर्शन को अश्विनी
कुमार वहां पे आए रे भक्तों
अश्विनी कुमार आए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब।

विष्णु जी गणों से ये बोले
प्रभु का करेंगे दीदार
जय-विजय विष्णु के गणों ने
मिलने से किया इंकार
ना माने विष्णु के गण

क्रोध में अश्विनी आए रे भक्तों
क्रोध में अश्विनी आए
रामायण रचयिता को प्रणाम
महर्षि को प्रणाम।

श्राप दिया दोनों गणों को
करने लगे हाहाकार
तीन बार तुम्हें मृत्युलोक में
लेना पड़ेगा अवतार रे भक्तों
लेना पड़ेगा अवतार
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब।

क्रोध में आए जय-विजय फिर
अश्विनी से फरमाए
एक बार मृत्युलोक में लेना
होगा जन्म बताए
गण और देवता
चारों शापित
हो गए फिर पछताए रे भक्तों
हो गए फिर पछताए
वाल्मीकि जी की बोलो जय जयकार
महाप्रभु की बोलो जय जयकार।

हाहाकार मचा देवलोक में
हम तुमको ये बताए
विष्णु जी ने चारों को फिर
अपने सम्मुख बुलाए रे भक्तों
अपने सम्मुख बुलाए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब।

हाथ जोड़कर चारों बोले
श्राप से मुक्ति दिलाए
सुनकर वाणी विष्णु जी
उन्हें उपाय बताए
जो विरोध करेगा मेरा
श्राप से मुक्ति पाए रे भक्तों
श्राप से मुक्ति पाए
रामायण रचयिता को प्रणाम
महर्षि को प्रणाम।

अगर करोगे भक्ति मेरी
मुक्ति ना मिल पाए
विरोध भाव या भक्ति का
रास्ता लो अपनाए रे भक्तों
रास्ता लो अपनाए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब।

चारों देवता बोले प्रभु से
विरोध भाव ही अपनाए
जय जन्मे भूमि पे हिरण
नाम से तुम्हें बताए

बाहरी रूप धरा विष्णु जी ने
हिरण्य का वध किया बताए
हिरण का वध किया
वाल्मीकि जी की बोलो जय जयकार
महाप्रभु की बोलो जय जयकार।

दूजे जन्म में आए रावण
कुंभकरण कहलाए
राम रूप से उन दोनों का
वध हुआ ये बताए रे भक्तों
वध हुआ ये बताए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब।

विष्णु जी की कृपा से गण
दोनों ही मुक्ति पाए
प्रश्न किया श्रीराम जी ने
वाल्मीकि जी बताए
अपने पूर्व जन्म की कहानी
ऋषिवर जी ये सुनाए ऋषिवर
तुमको ये सुनाए
रामायण रचयिता को प्रणाम
महर्षि को प्रणाम।

कौन सा पुण्य किया था तुमने
चरित्र मेरा लिख पाए
मेरे जन्म से पहले कैसे
लिखी रामायण बताए रे भक्तों
लिखी रामायण बताए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब।

वाल्मीकि जी प्रभु से पूर्व की
जन्म कथा सुनाए
पम्पासुर के पास संतराम
ब्राह्मण है बताए
गुरु कृपा से सिद्धि है पाई
निर्जल वन में आए रे भक्तों
निर्जल वन में आए
वाल्मीकि जी की बोलो जय जयकार
महाप्रभु की बोलो जय जयकार।

कड़क धूप में ऐसे वन में
जल भी ना मिल पाए
थक कर पेड़ के नीचे बैठा
बात ये संत बताए रे भक्तों
बात ये संत बताए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब।

उसी जगह पर एक विहंग फिर
संत के पास है आए
विहंग ने अपमान किया
महासंत की बात बताए

वस्त्र, आभूषण और कमंडल
छीन के ले कर जाए रे भक्तों
छीन कर ले कर जाए
रामायण रचयिता को प्रणाम
महर्षि को प्रणाम।

पांव की चप्पल भी ले गया
बात ये तुमको बताए
संत बोला चारों दिशा में
धूप में चलता जाए रे भक्तों
धूप में चलता जाए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब।

चुभे पांव में कंकड़ पत्थर
ब्राह्मण कष्ट उठाए
संत की हालत देख कर
विहंग को दया है आए
दौड़ा दौड़ा गया विहंग
चप्पल उन्हें लौटाए रे भक्तों
चप्पल उन्हें लौटाए
वाल्मीकि जी की बोलो जय जयकार
महाप्रभु की बोलो जय जयकार।

संत ने अपने चप्पल पाए
खुशियाँ खूब मनाए
विहंग तुम हो बड़े दयालु
संत ये बात बताए रे भक्तों
संत ये बात बताए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब।

हाथ जोड़ विहंग पूछे
कौन सा पुण्य किया
पूर्व जन्म का भेद बता दो
मुनिवर तुम्हें मनाए
पाप किए तुम पूर्व जन्म में
मुनिवर तुम्हें बताए रे भक्तों
मुनिवर तुम्हें बताए
रामायण रचयिता को प्रणाम
महर्षि को प्रणाम।

विहंग रूप तुम उसी वजह से
बुरे कर्म किए बताए
बोला विहंग मेरी मुक्ति का
सच्चा मार्ग बताए मुनिवर
सच्चा मार्ग बताए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब।

महासंत बताते जब तू
अगला जन्म है पाए
निर्धन घर में जन्मेगा
वाल्मीकि नाम कहाए

चोरी का तू काम करेगा
परिवार अपना चलाए रे भक्तों
परिवार अपना चलाए
वाल्मीकि जी की बोलो जय जयकार
महाप्रभु की बोलो जय जयकार।

सप्तऋषि आएंगे वहां पर
होगा तेरा उद्धार
विहंग ने अगला जन्म लिया
हुआ वाल्मीकि अवतार रे भक्तों
हुआ वाल्मीकि अवतार
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब।

राहगीरों को लूट लूट कर
चला रहा परिवार
किसी को मारे किसी को लूटे
करने लगा अत्याचार
एक समय उसी जगह से सप्तऋषि
निकलेंगे बताए रे भक्तों
सप्तऋषि हैं आए
रामायण रचयिता को प्रणाम
महर्षि को प्रणाम।

ठहरो ठहरो वाल्मीकि जी
उनको आवाज़ लगाए
बोले ऋषि दुष्ट लुटेरे क्यों तू
हमको क्यों है सताए रे भक्तों
हमको क्यों है सताए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब।

भूखा है परिवार मेरा
लूट कर उनको खिलाए
दे दो वस्त्र आभूषण ना तो
अपनी जान गवाए
सप्तऋषि फिर बोले उनसे
तुमको हम ये समझाए रे भक्तों
तुमको हम ये समझाए
वाल्मीकि जी की बोलो जय जयकार
महाप्रभु की बोलो जय जयकार

अपने कुटुंब जनों से ये पूछो
हम जो पाप कमाए
तुम भी उसको भोगोगे क्या
आप ये हमको बताएं रे मुनिवर
आप ये हमको बताएं
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब

मेरे बाद चले गए
यक़ीन हो कैसे बताए
बोले ऋषि वाल्मीकि से
यक़ीन हम ये दिलाए

जब तक आप नहीं आओगे
हरगिज़ यहां से ना जाए रे भक्तों
हरगिज़ यहां से ना जाए
रामायण रचयिता को प्रणाम
महर्षि को प्रणाम

हम ऋषियों का वचन है सच्चा
झूठ नहीं हो पाए
वाल्मीकि घर पहुँचे पत्नी
पुत्र से वो फरमाए रे भक्तों
पुत्र से वो फरमाए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब

मेरे पापों का फल तुम भी
भोगोगे क्या बताए
फल के हकदार हैं हम सभी
तुमको ये बतलाए
अपने पापों को तुम भोगो
भागीदार हमें ना बनाए रे भक्तों
भागीदार हमें ना बनाए
वाल्मीकि जी की बोलो जय जयकार
महाप्रभु की बोलो जय जयकार

पत्नी के जब सुने वचन तो
वाल्मीकि दुखियाए
जागी चेतना वाल्मीकि जी की
सप्तऋषि के पास आए रे भक्तों
ऋषि के पास वो आए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब

पापों के दलदल में मैं हूं
ऋषिवर मुक्ति दिलाएं
मेरे पाप में ना कोई शामिल
कुटुंब ना साथ निभाएं
ऋषियों के चरणों में रक्षा
की वो गुहार लगाएं रे भक्तों
रक्षा की गुहार लगाएं
रामायण रचयिता को प्रणाम
महर्षि को प्रणाम

मिलेगा पापों से छुटकारा
महामंत्र ये बताए
मरा मरा तुम बोलते रहना
जब तक लौट ना आए रे भक्तों
जब तक लौट ना आए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब

ऋषियों के उपदेश से
मरा मरा रट ये लगाए
मरा मरा की रट लगाते
बरसों बीते बताए

तन के ऊपर चढ़ गई दीमक
बना 'बा मिता' ये बताए रे भक्तों
बना 'बा मिता' ये बताए
वाल्मीकि जी की बोलो जय जयकार
महाप्रभु की बोलो जय जयकार

सप्तऋषि लौटे वापस
दीमक ढेर पे आए
वाल्मीकि का नाम पुकारा
बाहर दीमक से आए रे भक्तों
बाहर दीमक से आए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब

सूर्य समान वो चमक रहे थे
सप्तऋषि हर्षाए
राम नाम के प्रताप से
महर्षि कहलाए
शिव ने सुनाया ब्रह्मा जी को
तुम्हें रामचरित बताए रे भक्तों
तुम्हें रामचरित बताए
रामायण रचयिता को प्रणाम
महर्षि को प्रणाम

वाल्मीकि जी ने यही कथा
सुनी तुम्हें ये सुनाए
महाकाव्य रामायण लिखी
वाल्मीकि तुम्हें ये बताए रे भक्तों
वाल्मीकि तुम्हें ये बताए
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब

इनकी रचना राम को भाए
देवगण शीश नवाए
राम से पहले रामकथा
वाल्मीकि जी रचाए
ऋषि मुनि की श्रृंखला में
महान ये कहलाए रे भक्तों
महर्षि ये कहाए
वाल्मीकि जी की बोलो जय जयकार
महाप्रभु की बोलो जय जयकार

वाल्मीकि रामायण पढ़ते
प्रेम सहित हनुमान
हुआ संत ना कोई ऐसा
जिनको अद्भुत ज्ञान रे भक्तों
जिनको अद्भुत ज्ञान
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब

राम रतन में मगन रहे
वाल्मीकि हैं महान
महर्षि श्री वाल्मीकि जी के
चरणों में कर लो प्रणाम

हृदय में श्री राम बसाएं
वाल्मीकि जी प्रभु को पाएं रे भक्तों
वाल्मीकि जी प्रभु को पाएं
रामायण रचयिता को प्रणाम
महर्षि को प्रणाम

रवि लिखे प्रभु की कथा
भूल अगर हो जाए
कुमार मुकेश गाए प्रभु की रचना
भूल अगर हो जाए
करना क्षमा हे गुण ज्ञानी सब
चरणों में शीश नवाएं रे भक्तों
चरणों में शीश नवाएं
रामायण रचयिता जी की जय बोलो सब

वाल्मीकि जी की सत्य कथा को
मिलकर सुनें सुनाएं
वाल्मीकि उत्सव है आया
सारी खुशियां मनाएं
वाल्मीकि जी की महिमा को
मिलकर सुनें सुनाएं रे भक्तों
मिलकर सुनें सुनाएं
रामायण रचयिता को प्रणाम
महर्षि को प्रणाम
वाल्मीकि जी की बोलो जय जयकार
महाप्रभु की बोलो जय जयकार
रामायण रचयिता को प्रणाम
महर्षि को प्रणाम
वाल्मीकि जी की बोलो जय जयकार
महाप्रभु की बोलो जय जयकार

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%ae%e0%a4%b9%e0%a4%b0%e0%a5%8d%e0%a4%b7%e0%a4%bf-%e0%a4%ac%e0%a4%be%e0%a4%b2%e0%a5%8d%e0%a4%ae%e0%a5%80%e0%a4%95%e0%a4%bf-%e0%a4%95%e0%a5%80-%e0%a4%9c%e0%a5%80%e0%a4%b5%e0%a4%a8-%e0%a4%95/